सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• कैलाश मंडलोई 'कंदब'

सृजक-सृजन-समीक्षा

कैलाश मंडलोई 'कंदब'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

कैलाश मंडलोई 'कंदब' का परिचय

नाम - कैलाश मंडलोई 'कंदब'

जन्म :- 15-06-1967

पिता का नाम -स्व0श्री नानूराम मंडलोंई

माता का नाम–श्रीमति नीलाबाई

पत्नी का नाम–श्रीमति ललीता मंडलोई

स्थाई पता : मु. पो.-रायबिड़पुरा

तहसील व जिला- खरगोन (म.प्र.)

पिनकोड न.451440

मोबाईल नम्बर-9575419049

ईमेल ID-kelashmandloi@gmail.com

शिक्षा - एम. ए. हिन्दी,डी.एड.

व्यवसाय- शिक्षक

सेवा कार्य- विशेष कार्य एवं रुचि- वृक्षारोपण शाला परिसर में 1000 पौधों का वृक्षारोपण कर एक गार्डन तैयार किया।

अन्य शैक्षिक गतिविधियाँ

इसके साथ अन्य दुसरी गतिविधियाँ भी चलती रही जैसे अतिरिक्त समय में 6,7.व 8 कक्षा के छात्र/छात्राओ को पढ़ाना तथा सुबह 6 बजे से 7.30 बजे तक योग की कक्षाऐ लगाना। योग की कक्षा में हाईस्कूल के बच्चे भी आते है ये कक्षाऐ मैं अक्टूम्बर, नवम्बर एवं दिसम्बर माह में लगाता हूँ.

शैक्षिक सामग्री का निर्माण व प्रदर्शन

600 से अधिक विज्ञान एवं गणित के माडलों का निर्माण वह भी अनुपयोगी वस्तुओं से,1000 से अधिक कटाउट्स,1000 से अधिक चार्ट,अख़बार की कटिग जिसमे खाली माचिस डिबिया,खाली खोखे,रिफिल,पेन के ढक्कन,खाली टुथपेस्ट,प्लास्टिक पन्नियाँ,सइकिल रबरट्यूब,टपरीकार्डर की मोटरे,लकड़ी के गत्ते

से बने माडल आदि।
अन्य शालाओं के छात्र/छात्राओं को अपनी शाला में बुलाकर विज्ञान/ गणित माडलों का प्रदर्शन करना। वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करना व विभिन्न राष्ट्रिय एवं सांस्कृतिक दिवसो तथा महापुरुषो के जन्म दिनों पर ग्राम के लोगो एवं अन्य संस्था के कर्मचारियों को एकत्रित कर संगोष्ठियों का आयोजन करना।

लेखन एवं साहित्यिक क्षेत्र में कार्य एवं उपलब्धियाँ

लेखन विधा–नई कविता, छंद, छंदमुक्त रचनाएं एवं आलेख लेखन आदि।
अनेक कवि सम्मेलनों में कविता पाठ

प्रकाशन विवरण

प्रकाशित पुस्तक **साहित्यमेध**

साझा काव्य संग्रह- (1) वर्तमान सृजन, (2) नव काव्यांजलि, (3) एक पृष्ठ मेरा भी, (4) छंद कलश, (5) संगम समीक्षा सुधा (6) मन की बात, (7) समकालीन हिंदी कविता खंड-1 (8) अम्मा कहती थी, (9) संगम संकल्पना, (9) नये पल्लव-2 (10) काव्यांकुर-5 (11) स्पंदन (12) कथा सेतु (13) विचार मंथन

अनेक पत्र-पत्रिकाओं तथा वेब पोर्टलों पर कविताएँ, कहानी, आलेख, समीक्षा प्रकाशित

(1) शैक्षिक दखल पत्रिका (2) हस्ताक्षर वेब पत्रिका (3) देश बंधु (4) रचनाकार (5) literature point (6) सेतु (7) लोक जंग (8) सवेरा (9) न्युज दरबार (10) अंतरा शब्द शक्ति आदि।

सम्मान- साहित्यिक क्षेत्र में पुरस्कार

1-साहित्य संगम संस्थान द्वारा प्रदान श्रेष्ठ रचनाकार एवं श्रेष्ठ टिप्पणीकार सम्मान। 2-काव्य मार्तण्ड सम्मान 3- साहित्य संगम समीक्षाधीश 4-साहित्य अभ्युदय सम्मान तथा साहित्य संगम संस्थान की व्याकरणशाला एवं छंदशाला में श्रेष्ठ प्रदर्शन के प्रमाण पत्र। 5-अंतरा शब्दशक्ति सम्मान

(6) विशेष पुरस्कार

1- जिला स्तर पर कलेक्टर द्वारा सम्मानित

2-जिला स्तर पर पर्यावरण पर सम्मानित

3- जिला स्तर पर शिक्षक सम्मान से सम्मानित।

4- वर्तमान में *साहित्य संगम संस्थान* में पंच परमेश्वर अधीक्षक के पद पर कार्य रत हूँ जो ऑनलाइन व्हाट्सएप फेसबुक ट्यूटर यूट्यूब पर साहित्यक गतिविधियों का आयोजन करती है। जैसे दैनिक विषय पर सृजन, गजल शाला, व्याकरण शाला, गीत संगीत, छंदशाला के साथ ही साथ ऑनलाइन मंचीय कवि सम्मेलनों का आयोजन किया जाता हैं। साथ ही साथ साझा पुस्तकों का प्रकाशन भी किया जाता है एवं 5 ई पत्रिकाएं भी निकाली जाती है।

आत्मकथ्य

जब मैं कन्या मा0 वि0 रायबिड़पुरा में दिनांक 15/12/2005 को अन्य संस्था से स्थानांतरित हो कर आया तो यहाँ के शाला परिसर की हालत बहुत ही खराब थी। खेल के मैदान एवं अन्य व्यवस्थाओं से सम्बन्धित कुछ असामाजिक व्यवस्थाएँ निर्मित थी। यहाँ गंदगी एवं अव्यवस्थाओं का साम्राज्य था जिससे न तो शाला के अन्य कर्मचारियों को कोई आपत्ति थी और न ही गाँव के लोग और सरपंच महोदय को। बाउंड्री वाल न होने से शाला परिसर चारों ओर से खुला था। आवारा बच्चे यहाँ दिन भर खेला करते थे। शाला की खिड़कियाँ व दरवाजे तोड़ना, भवनों की छत पर चढ़ कर दौड़ना आम बात थी। आए दिन गाँव के अराजक लोगों का जमघट लगा रहता था। दशहरे पर रावण के पुतले को यही जलते थे। लोग कूड़ा करकट यहीं फेंकते थे, कुछ लोग अपने जानवरों को भी यहाँ बाँधते थे। स्कूल मैदान नदी से लगा था। नदी किनारे लगभग 500 मीटर क्षेत्र में कटीली झाड़ियाँ, बबूल के पेड़ एवं बड़े-बड़े गड्ढे थे। गाँव के लोग इसी मैदान में देर सबेरे शौच भी करते थे और मैदान शौच एवं गंदगी से पटा रहता था। गाँव के पूर्व सरपंच ने 50 से 55 ट्राली पत्थर एवं मलबे का ढेर इसी मैदान में लगा दिया था जिनमें कांटे व झड़ियाँ उग आई थी तथा इसी में आए दिन सांप बिच्छु निकलते थे। जब मैंने सरपंच को मैदान में डाले गए पत्थर एवं मलबे के ढेर को हटाने का आवेदन दिया तो उन्होंने यह कहकर मना कर दिया की यह तो पूर्व सरपंच का काम है मेरा नहीं। तब मैंने ही पत्थरों को हटाने का काम स्कूल समय के अतिरिक्त समय में सुबह शाम दो दो घंटे दे कर शुरू कर दिया। इस कार्य में मैंने बच्चों का भी सहयोग लिया। हम पत्थरों को उठाकर नदी किनारे जमाने लगे। लग-भग एक वर्ष के सेवा कार्य में मैंने बच्चों के साथ मिलकर इन पत्थरों को उठाकर नदी किनारे बहुत बड़ा पाला जमा दिया।

उन्हीं दिनों एक और समस्या थी की गाँव के लोग इसी मैदान में देर सबेरे शौच करते थे, और मैदान शौच एवं गंदगी से पटा रहता था। मैंने शाला परिसर में शौच करने वालें लोगों को रोकने की योजना बनाई। फिर क्या था मैं सुबह 4 बजे हाथ में टार्च लेकर शाला मैदान में छिपकर बैठने लगा और जो भी व्यक्ति मैदान में शौच करने बैठता मैं उसके मुंह पर टार्च का लाइट मरता और वह व्यक्ति वहाँ से भागता। इसी बीच अनेक लोगों से मेरी कहासुनी भी हुई। इस प्रकार शौच करने वालें लोगों को भगाने का काम लगभग 4 वर्षों तक चलता रहा। मैंने हार नहीं मानी और लोगों ने यहाँ शौच करना बंद कर दिया। तभी पौधे लगाने का शासकीय आदेश आया जो मैंने 10-12 पौधे लगा कर वृक्षारोपण का कार्य शुरू किया। जो जुनून बनकर सवार हो गया और आज 11 वर्षों की अथक मेहनत से पूरे शाला परिसर में 1000 पौधों का रोपण किया जो आज बड़े वृक्ष बन गए हैं। शाला परिसर जहाँ लोग शौच करते थे आज उसने एक बगीचे का रूप ले लिया है। इसमें छायादार, फल फूल एवं डेकोरेटेड पौधे लगे हुए है। यह कार्य करते हुए मुझे लोगों ने कई उपाधियाँ दी। शुरुआत के दो-तीन वर्षों में जब मैं सुबह-सुबह स्कूल में काम करने लग जाता जैसे पत्थर फेंकना, गड्ढ़े खोदना, झाड़ियाँ काटना देर सबेरे व देर रात तक स्कूल में रहना तो लोग मुझे पागल कहने लगे और कई उपमाएँ दी जैसे पागल मास्टर, झाड़ लगानेवाला मास्टर, गंदगी उठाने वाला मास्टर आदि।

संसार में कुछ लोगों में एक गुण विशेष पाया जाता है, दूसरों की हँसी उड़ने का गुण। आपका उपहास कोइ करता है करता रहे यह सोचकर मैं अपना काम करता रहा। और मेरे लिए वह घटना मेरे जीवन की सुखद घटना थी जब 25 दिसम्बर 2009 को नई दुनिया के मुख्य पृष्ठ पर मेरी खबर "शिक्षा के कैलाश पर विराजित मंडलोई" छपी तो शिक्षा जगत से जुड़े लोगों के चेहरों पर एक चमक सी आ गई। खबर में लिखा था गुरु शब्द को सम्मानित किया एक शिक्षक ने, ज्ञान और पर्यावरण का बागबान, रायबिड़पुरा स्कूल का कया कल्प। नई दुनिया के मुख्य पृष्ठ पर जब मेरे कार्य की खबर छपी तो मुझे जीवन में पहली बार इतनी खुशी मिली की मेरे मन में न समाय। यह खबर मुझे आज भी कार्य करने की प्रेरणा देती हैं। मेरी कलम चलती है। मानव की कथा-व्यथा एवं उसके दुःख दर्द को उकेरने में मुझे शुकुन मिलता है।

मैं आवाज लगाऊँगा

उठे भरोसा, उगे शब्द झूठे
छोड़ दे, उम्मीदों की फसल बोना
नए शब्द बोऊँगा, नई फसल उगाऊँगा
जन-जन के मन में, भरोसा मैं जगाऊंगा
कोई जागे, या न जागे,
मैं आवाज लगाऊँगा,
अपना कवि धर्म निभाऊंगा।
लगेगी शब्दों से आग
हृदय जल उठेंगे,
अश्रु जल बरसाऊंगा
मैं अपने जज़्बातों से,
दिलों की आग बुझाऊंगा
कोई जागे या न जागे,
मैं आवाज लगाऊँगा,
मैं अपना कवि धर्म निभाऊंगा।
जाग उठे सोई मानवता
उठ खड़ी हो दिलों में क्रांति
जम जाए शब्द, जन-जन के मन में
कुछ ऐसी बात रखूंगा
कोई जागे या न जागे,
मैं आवाज लगाऊँगा,
अपना कवि धर्म निभाऊंगा।

दुखियों के भगवान नहीं क्या?

स्वार्थ की सीलन से
जीवन की फिसलन से
लुट-लुट कर दिन लाखों के
अपनी रात सज़ा रक्खी है
पुछ रहे विश्वास हमारे
दुखियों के भगवान नहीं क्या?
सूखा तन सूखा ही मन
दो वक्त रोटी को तरसे
शुष्क पेट में लगी आग है
इनको जीवनदान चाहिए
झुलस रहे है प्रण हमारे
दुखियों के भगवान नहीं क्या?
गीत अधूरे, टूटे सपने,
यही बचें है संग सहारे
इनकी आँखों में लाखों आंसू
है हर आँसू में चिंगारी
फटी हुई आँखों से निहारे
दुखियों के भगवान नहीं क्या?
आओ समझें इनको जाने
इनकी पीड़ा को पहचाने
इनको भी सम्मान चाहिए
इनके भूखे पेट भरे हम
बन जाओ तुम इनके सहारे
दुखियों के भगवान नहीं क्या?

चलती जिंदा लाशें

तरह-तरह के चेहरे
तरह-तरह की पोशाकें
समझ नहीं पाया
मेरा मन
स्वप्न या जागृति।
भीड़ में चलती
जिंदा लाशें
पुछती अपने आप से
अपने सपनों का बोझ
पराये कंधे पर टिकाए
आसान नहीं होता
अपने कंधों पर
अपनी ही अर्थी ढोना।
झूठी शान,
दिखावे के पीछे
भागती भीड़
सभ्यता की खोल ओढ़े
खुद अपने ही हाथों
अपने जमीर को मार कर
हँस रही है लाशें
अपनी मानवता पर
अपने मुर्दे पन पर
स्वप्न या जागृति
समझ नहीं पाया मन।

माँ की आशा टूट गई (बेरोजगारी)

‘जाने क्यों?’ चिथड़ों में मिली
जिन्दगी
चिथड़ों में सिमट कर रह गई।
उसने व भूखी, प्यासी
अनेक रातें ऐसी गुजारी थी...।
जब वह घर देर से आता था
‘वह सोचती’ रह जाती...।
कभी-कभी वह आता ही नहीं
और वह आता था
तो अपने आप में ही उलझा-हुआ
व्यस्त-सा...।
वह नहीं समझ पाती थी
उसे किस चीज की व्यस्तता
रहती है...।
बेटा है माँ की फिक्र
पता नहीं रोटी भी ठीक से खाता
है या नहीं।
विधवा माँ ने
दुःख सहा, लोगों के ताने सुने
मजदूरी की
पेट काटकर उसे पढ़ाया।
वह थकी-थकी
बूढ़ी हो चुकी सी
सोचती नौकरी मिल जायेगी
बहू आएगी पोते-पोती होगे।
उसे क्या पता
नौकरी खोजने, रोजगार पाने में
तमाम डिग्रियाँ और उपलब्धियाँ
नौकरी की मुहताज है।
रिश्वत भ्रष्टाचार में
सिफारिश है जिसकी
नौकरी
उसकी पक्की ।
बेटे ने कई जगह
किस्मत आजमाई
न उसका हुनर काम आया
न कोई डिग्रियाँ काम आई।
माँ की आशा टूट गई
‘जाने क्यों?’
चिथड़ों में मिली जिन्दगी
चिथड़ों में सिमट कर रह गई।

श्रम सीकर से लथपथ चेहरे

सींची फसलें अपना खून बना पसीना
बना रक्त अन्न कणों में उसका पसीना
स्वाद वही मिट्टी का,क्या तुम पहचान सकोगे?
श्रम सीकर से लथपथ चेहरे
क्या इनको तुम पहचान सकोगे?
वे डरे सहमे, कर्म करें
जब मेघ बजे दादुर चमके
हम उल्लास मनाते है
कीचड़ कालिख से सने हाथ उनके
हम साफ पाक हो जाते है
भीषण अग्नि में तप-खप अन्न कण उपजता
श्रम की महिमा उनकी क्या तुम पहचान सकोगे?
श्रम सीकर से लथपथ चेहरे
क्या इनको तुम पहचान सकोगे?
आओ इनको समझे जाने
इनकी पीढ़ा को पहचाने
इनको भी सम्मान चाहिए
इनके श्रम का दाम चाहिए
आओ इनको गले लगाए, इनके घर आँगन भी सजाएं
आपदा विपदा इनकी, क्या तुम पहचान सकोगे?
श्रम सीकर से लथपथ चेहरे
क्या इनको तुम पहचान सकोगे?

माँ कहती है मेरा लाल

माँ-बाप ने सपने देखे
सोचा बहू आएगी
गरमा गरम खाना
अपने हाथों से खिलाएगी
घर के कामों से आराम मिलेगा।
पोते- पोती होंगे नन्ही किलकारीं से
घर का आँगन गूँजेगा
खुशियों का संसार रचेगा।
बहू आई, आते ही
कर दी घर की सफाई
पुराने पर्दे हटा दिए
रिश्तों की दीवार गिरा दी
बोली पति से
मकान है छोटा वेतन है कम
आपके माँ-बाबूजी के साथ
रहने में मेरा घुटता दम
बेटा निकला पत्नी आज्ञाकारी
जिन्होंने लाड़ प्यार से
पाला पोसा पढ़ाया लिखाया
खुद कष्ट सहे
जिसकी खुशियों के खातिर
उसने इस एहसान के बदले
घर से उनको दिया निकाल
जीते जी कर दिया हलाल
आधुनिक युग का देखो लाल
कैसे-कैसे करता कमाल
वृद्धाश्रम में माँ-बाप छोड़ा
फिर भी माँ कहती है मेरा लाल।

एक दाँव और सही

गैरों की नहीं
अपनों की बात करते है
युगों-युगों से ठगों के बीच
ठगाता आया
कोई पत्नी से ठगा गया
कोई पति से ठगा गया
कोई बहू से ठगा गया
कोई बेटे से ठगा गया
आखिर में तो सब
मौत से ठगें ही
जाने वाले है
मौत ठग ले, उसके पहले तू
इंसानियत से ठगा जा
किसी भूखे की, भूख मिटाते ठगा जा
किसी बेसहारा का, सहारा बन ठगा जा
तो घाटा भी क्या पड़ेगा?
अब ठगवाने को तुम्हारे पास
बचा भी क्या है?
युगों से तुम, ठगाते आये हो,
हारते आये हो।
एक बार और हार सही।
एक बार एक दाँव और सही।

1.
"कदंब" जी हार्दिक बधाई ।
केंद्रीय पोस्ट में स्थान पाए आप ।
धन्य आप धन्य आपका सृजन ।
गाँव की माटी से उपजा *कदंब* ,
कदंब सी आभा बिखेरते हूए ।
शिक्षक धर्म निभाते हूए ,
सामाजिक संलग्नता एवं
साहित्य साधना , प्रशंसनीय है ।
समय के साथ लिखी गईं ,
सार्थक रचनाएँ ।
यथार्थ भाव उकेरते हूए ।
नमन आपके लेखन को ।
नमन आपके व्यक्तित्व को ।
उज्वल भविष्य की कामना के साथ ।

विवेक दुबे"निश्चल"
रायसेन (म.प्र.)

2.
आ0 कैलाश जी सप्ताह के केंद्रीय रचनाकार के रूप में आपका हार्दिक स्वागत है। दुगुनी खुशी इस बात की है आज मेरे नगर भाई की पोस्ट लगी है ।
"कोई जागे, या न जागे, मैं आवाज लगाऊँगा" आप ही कि पंक्तियाँ आप ही को चरितार्थ कर रही है । अच्छा कहते बहूत लोग हैं , लिखते भी बहूत लोग हैं लेकिन उस अच्छे लिखे को अमल में लाकर अपने व्यवहार में ढाल लेना बहूत चुनिंदा लोग कर पाते है । आपने आत्मकथ्य चंद मिनिटों में चंद पँक्तियों में लिखा होगा , लेकिन वास्तविकता की जमीन पर इन कार्यो को फलीभूत करने में जितना समय, परिश्रम और समर्पण लगा होगा वो मैं समझ सकता हूँ । विरले लोगों में ही यह देखने को मिलता है । आपके इस प्रेरणादायी व्यक्तित्व को नमन ।
मैं आवाज लगाऊंगा रचना में आपकी प्रतिबद्धता छलक रही है । आप आवाज लगा रहे हैं और सुनकर लोग जाग भी रहे हैं ।
दुखियों के भगवान नहीं क्या ?
झकझोरता प्रश्न, मार्मिक सृजन..। पांच सितारा सृजन ।
अपने सपनों का बोझ
पराये कंधे पर टिकाए
आसान नहीं होता
अपने कंधों पर
अपनी ही अर्थी ढोना

आधुनिकता के पीछे भागती पीढ़ी पर तीखा।कटाक्ष । प्रभावी रचना । आपका एक और उत्कृष्टतम सृजन ।

श्रम सीकर से लथपथ चेहरे...किसान की पीड़ा, व्यथा का प्रभावी काव्यांकन । आपकी रचनायें कल्पनालोक से दूर धरातल से जुड़ी हूई हैं । सृजन हमेशा देश, समाज, किसान और पर्यावरण से जुड़ा हूआ होता है , प्रभावी विचार धारा लिये हूए असरदार रचनाकार हैं आप । **आपके प्रकाशनों, पुरस्कारों से कहीं ऊपर और उत्तम आपके कर्म है । आपके द्वारा लागये गये वृक्ष आपके असल स्मृति चिन्ह है ।**

आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पुनः बधाई ।

हेमन्त बोर्डिया

3.

वाहःह...कैलाश मंडलोई जी...आप का आत्मकथ्य प्रेरणास्पद और अनुकरणीय है....समाज सेवा और सुधार के लिए जूनून आवश्यक है1...

1..मैं आवाज़ लगाऊंगा

अपना धर्म निभाने को प्रेरित करती रचना

2,..दुखियों के भगवान नही क्या....आर्थिक विषमता को दर्शाती... झँझोरती रचना ...सत्य है ..कही अधिकता है तो कही न्यूनतम आवश्यकता भी पूरी नही

3...**चलती जिन्दा लाशें** वाक़ई समझ नही पाया मन...कोण से सपने लिए हम भागते फिर रहे है ...बेहतरीन अभिव्यक्ति

4....माँ की आशा टूट गई उफ्फ़फ़ बेहद मार्मिक...देखा है मैंने कई मेहनती लोगो को जो डिग्रियां होते हूवे भी जिनके पास उचित रोजगार नही है ....

5....श्रम सीकर से लथपथ चेहरे वाहःह...किसानो की दशा दर्शाती रचना....सही है बिन मौसम बरसात पर हम खुश होते है जबकि ये किसानों की चिंता का विषय होता है

6...माँ कहती है मेरा लाल दुःखद...कई घरों की दृढ़ता सुनाती रचना

7...एक दाव और सही वाहःह लाज़वाब रचना...कितना सत्य कहा आपने इस प्रकार ठगे जब में आत्म संतुष्टि है ...

सभी रचनाये एक से बढ़ कर एक .

बहूत बहूत **बधाई** कैलाश जी आप की कलम यूँ ही चलती रहे और हमे आपको पढ़ने का सौभाग्य मिलता रहे...**अनेकानेक शुभकामनाये**

शिरिन भावसार

4.

सर्वप्रथम इस **छोटी सी लेखनी का नमन** स्वीकार करें

आपको आज की उत्सव मूर्ति बनने हेतु कोटि कोटि **बधाई,**

आ भैया जी आपकी शैक्षणिक गतिविधियों के विषय में पढ़ा,बहूत अच्छा लगा,आपके ईश्वर ने अनेक गुणों का आशीर्वाद देकर इस धरा पर भेजा है,आप जैसे विशिष्ट व्यक्तित्व का सानिध्य ही हमारे लिए सौभाग्य की बात है,आपका

आत्मकथ्य प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणा देने वाला है,
आज के युग में जहाँ शिक्षा पद्धति अधर में और शिक्षकों के नैतिक मूल्यों का पतन निरंतर हो रहा है,आज शिक्षक स्कूलों में छात्रों को पढाना भी आवश्यक नहीं समझते, ऐसे में आपके जुनून और जज्बे को नमन करती हूँ, **परोपकार का कार्य सदा ही मन को आनंदित करता है,...**

बाटन बारे को लगे ज्यों मँहदी के रंग

आपकी बहुत सारी रचनायें पढ़ी हैं मैंने,
आपकी रचनाओं की भाषा बहुत सुंदर और सहज होती है,आपकी सभी रचनायें वास्तविक जीवन से जोड़ती हुई होती हैं,

मैं आवाज़ लगाऊँगा

यह रचना तो आपके व्यक्तित्व पर बिल्कुल सटीक बैठती है,

दुखियों के भगवान नहीं क्या

बहुत ही संवेदनशील लेखनी है प्रत्येक शब्द अंतर को भेदता हुआ

चलती जिंदा लाशे

वर्तमान के मनुष्य रूपी जीव का सटीक वर्णन

माँ की आशा टूट गई

इस बेरोजगारी के युग में न जाने कितनी ही माँ ओ की आशाये इसी भाँति चिथड़ो में विलीन हो रही हैं

श्रम सीकर से लथपथ चहरे

किसानों की दशा का बहुत ही मार्मिक वर्णन

माँ कहती है मेरा लाल

दिशा हीन और संस्कार हीन पीढीयों का यही सत्य है,

एक दाँव और सही

बहुत ही सुंदर शानदार रचना हुई,
जीवन यात्रा को मृत्यु के द्वार पर विराम देना ही है,
तो एक दाँव और सही,
आपकी रचनायें जीवन परिचय आत्म कथ्य सभी प्रेरणादायक है,
आप अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सदा ही नये कीर्तिमान स्थापित करें,और आने वाली पीढ़ी को सार्थक व नवीन विचारों से पोषित आदर्श प्राप्त हो,माँ सरस्वती सदा ही आप पर कृपालु रहें,...

मेघा योगी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com